

शिवाजी : युद्ध और विजय

जब छत्रपति शिवाजी का जन्म हुआ, तब दक्कन क्षेत्र तीन मुस्लिम राज्यों : बीजापुर , अहमदनगर और गोलकुंडा , तथा मुगल साम्राज्य में विभाजित था । उन्होंने 1645 में 16 वर्ष की आयु में तोरणा किले पर कब्जा करके बीजापुर सल्तनत के विरुद्ध अपना अभियान शुरू किया।

छत्रपति शिवाजी महाराज, पुरंदर के युद्ध (1665) के बाद , मुगल साम्राज्य के जागीरदार बन गए और कुछ समय के लिए उनकी ओर से सैन्य अभियानों में भाग लिया।

शिवाजी गुरिल्ला युद्ध में माहिर हो गए , जिन्हें मराठी में "गनीमी कावा" कहा जाता था । उनकी रणनीति ने उनके विरुद्ध भेजी गई सेनाओं को लगातार आश्चर्यचकित और पराजित किया।

बीजापुर के साथ युद्ध:-

छत्रपति शिवाजी के पिता शाहजी मुगल साम्राज्य के खिलाफ विद्रोही थे, जो बीजापुर सल्तनत में भूमि अनुदान के अवसर तलाश रहे थे। छत्रपति शिवाजी का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब उनके पिता के मुगलों के साथ संघर्ष के कारण अस्थिरता और बार-बार स्थानांतरण का दौर चल रहा था। 1636 में , बीजापुर की आदिल शाही सल्तनत ने शाहजी की सहायता से दक्षिणी राज्यों पर आक्रमण किया ।शाहजी ने पूना को अनुदान के रूप में प्राप्त किया था , तथा दादोजी कोंडदेव को इसके प्रशासन का प्रभारी नियुक्त किया।उन्हें बीजापुर सल्तनत के आदिल शाह द्वारा बैंगलोर में तैनात किया गया था , जबकि छत्रपति शिवाजी और उनकी मां जीजाबाई पूना में बस गए थे।

1647 में कोंडदेव की मृत्यु के बाद, छत्रपति शिवाजी महाराज ने पूना पर अधिकार कर लिया । उनके पहले कार्यों में से एक था बीजापुर सरकार का सीधा विरोध करा।

छत्रपति शिवाजी महाराज ने बीजापुर दरबार में उथल-पुथल के बीच 1646 में तोरणा किले पर कब्जा करके सत्ता में अपनी वृद्धि शुरू की ।उन्होंने पुरंदर, कोंढाणा और चाकन सहित पुणे के पास प्रमुख किलों और कस्बों पर कब्जा करके अपना विस्तार जारी रखा ।छत्रपति शिवाजी महाराज ने राजगढ़ में अपना मुख्यालय स्थापित किया । उनकी बढ़ती शक्ति से घबराकर बीजापुर सरकार ने उनके पिता शाहजी को 25 जुलाई 1648 को कैद कर लिया । 1649 में शाहजी की रिहाई के बाद , छत्रपति शिवाजी ने अपनी छापेमारी फिर से शुरू की। उन्होंने बीजापुर के एक मराठा जागीरदार चन्द्र राव मोरे की हत्या कर दी, जिससे आगे की विजय में सहायता मिली। अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए, छत्रपति शिवाजी महाराज ने विवाह गठबंधन , गांव के नेताओं के साथ सीधे व्यवहार और बल जैसी विभिन्न रणनीतियों के माध्यम से कई शक्तिशाली परिवारों को अपने नियंत्रण में लाया। हालाँकि, 1664-1665 के आसपास शाहजी की मृत्यु के बाद , शिवाजी की सेनाओं को हुए नुकसान से असंतुष्ट बीजापुर सरकार ने 1657 में अफजल खान को उन्हें गिरफ्तार करने के लिए भेजा ।

प्रतापगढ़ का युद्ध (1659):

प्रतापगढ़ का युद्ध 10 नवंबर, 1659 को सतारा के प्रतापगढ़ किले में हुआ था। यह युद्ध छत्रपति शिवाजी की मराठा सेना और जनरल अफ़ज़ल ख़ान की कमान वाली बीजापुर सेना के बीच हुआ था। मराठों ने निर्णायक विजय हासिल की, जो एक प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति के विरुद्ध उनकी पहली बड़ी सैन्य सफलता थी।

पन्हाला किले पर कब्ज़ा :

1659 में बीजापुरी सेनाओं पर विजय पाने के बाद, छत्रपति शिवाजी कोंकण तट और कोल्हापुर की ओर बढ़े और पन्हाला किले पर कब्ज़ा कर लिया।

1660 में आदिलशाह के सेनापति सिद्दी जौहर ने मुगलों के सहयोग से पन्हाला पर घेरा डाल दिया। कई महीनों की घेराबंदी के बाद, छत्रपति शिवाजी ने 22 सितम्बर 1660 को पन्हाला किले पर आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद वह विशालगढ़ चले गए और बाद में 1673 में पन्हाला पर पुनः कब्जा कर लिया।

पवन खिंड का युद्ध (1660) :

पवन खिंड का युद्ध 13 जुलाई 1660 को हुआ, जिसमें मराठा नेताओं का सामना बीजापुर सल्तनत के सिद्दी मसूद से हुआ। इस युद्ध में मराठों की हार हुई लेकिन बीजापुर सल्तनत अपने समग्र उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकी।

Cont...